the pioneer
LUCKNOW | THURSDAY | JULY 3, 2014

IISR organising training programme for sugar millers

Lucknow (PNS): Indian Institute of Sugarcane Research is organising a 21-day national training programme for sugar millers to train them in latest techniques of sugarcane production. The training exercise was inaugurated by IISR director S Soloman on Wednesday at the Indian Institute of Sugarcane Research.

Speaking on the occasion, Solomon said that the training was being organised to introduce scientific techniques in sugarcane production.

"Scientific information is much needed at every level from the field to factory and three issues are the major concern of this training. These include how to increase sugarcane yield, enhance sugar recovery in mills and how to decrease the cost of cultivation to make sugarcane more profitable and popular among farmers. Besides, other issues like information on recent advances in sugarcane cultivation, problem in exchange of information, penetration of sugarcane technology to the grass-root level, communication strategy to increase cane area and yield in mill zone, IT tools for cane management will be deliberated during the training programme," he pointed out.

Head, Crop Production, TK Srivastava highlighted the importance of knowledge deliverance to address the challenges ahead before the sugar sector in the country.

In-charge of the national training AK Sah said that the emphasis was to provide knowledge in varietal planning, maturity survey, harvesting and other related activities for ensuring sufficient quantity of good quality sugarcane to maintain desired level of sugar recovery throughout the coming crushing season. The major areas to be covered during the training are techniques of seed cane production and multiplication, varietal planning, replacement, development and harvesting schedule, plant population management and planting methods, soil health management and integrated nutrient management, intercropping in sugarcane and water management, management of ratoon crop, mechanisation in sugarcane, minimising post-harvest losses, biological control of insect-pests and diseases, integrated communication strategy,

लखनऊ, 3 जुलाई 2014 दैनिक जागरण

अधिकारी सीख रहे हैं नई तकनीक

जागरण संवाददाता, लखनऊ : गन्ना किसानों को उन्नत गन्ना उत्पादन तकनीक प्रयोग करने के लिए जागरूक व प्रेरित करने की जरूरत है, जिसमें चीनी मिलों में कार्यरत गन्ना विकास अधिकारियों की भूमिका अहम् है। इसके मद्देनजर भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान द्वारा 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया है।

प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य मिल अधिकारियों को गन्ना प्रबंधन एवं उत्पादन के विभिन्न विषयों पर आधुनिक व वैज्ञानिक ज्ञान देकर उन्हें अधिक सक्षम, शिक्षित एवं बौद्धिक रूप से मजबूत किया जाना है। राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्रभारी डॉ. एके साह के अनुसार इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में गन्ना उत्पादन के विभिन्न पहलुओं जैसे प्रजाति नियोजन, बीज उत्पादन, आधुनिक बोवाई विधियां, पोषक तत्व प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जैविक विधि द्वारा कीट व बीमारी प्रबंधन, सूखा व जलभराव प्रतिरोधी तकनीक, गन्ना मशीन, पोस्ट-हारवेस्ट प्रबंधन, गन्ना विपणन व आय-व्यय आकलन आदि पर आधुनिक जानकारी दी जाएगी। प्रशिक्षण का उद्घाटन निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने किया।

डॉ. सोलोमन ने कहा कि प्रशिक्षण द्वारा चीनी मिलों में किसान के खेतों पर गन्ना उत्पादन में विज्ञान को समाहित करने का प्रयास होगा। उत्तर भारत के आठ चीनी मिलों के 16 गन्ना विकास अधिकारी इस प्रशिक्षण में भाग ले रहे हैं।

www.samaylive.com

राष्ट्रीय सहारा

सच कहने की हिम्मत

राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण

• देहरादून • वाराणसी से प्रकाशित

लखनऊ | बृहस्पतिवार • 3 जुलाई • 2014

गन्ना की अधिक उपज पर जोर

सरोजनीनगर-लखनऊ (एसएनबी)। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. सुशील सोलोमन ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में सरकार द्वारा निर्धारित उदार चीनी नीतियों के कारण कई नई चीनी मिल देश में लगाई गई हैं। इस कारण चीनी मिलों के अन्तर्गत गन्ना क्षेत्रफल में कमी आई है। मिलों को स्थापित गन्ना पेराई क्षमता पर चलाने के लिए कम गन्ना क्षेत्रफल में अधिक गन्ना उत्पादन करने की आवश्यकता होगी और यह आधुनिक व उन्नत उत्पादन तकनीक को अपनाकर प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए गन्ना किसानों को उन्नत गन्ना उत्पादन तकनीक प्रयोग करने के लिए जागरूक व प्रेरित करना पड़ेगा, जिसमें चीनी मिलों में कार्यरत गन्ना विकास अधिकारियों की भूमिका अहम है।

उन्नत कृषि तकनीक के माध्यम से कम क्षेत्रफल में अधिक गन्ना उत्पादन के बारे में जानकारी देते कृषि वैज्ञानिक।

डा. सोलोमन बुधवार को रायबरेली रोड स्थित संस्थान परिसर में आयोजित 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन के दौरान संस्थान व चीनी मिलों के अधिकारियों को सम्बोधित कर रहे थे। इस मौके पर डा. सोलोमन कहा कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से चीनी मिलों में किसान के खेतों पर गन्ना उत्पादन में विज्ञान को समाहित करने का प्रयास होगा। उन्होंने कहा कि उपज में बढ़ोत्तरी, चीनी का अधिक उत्पादन तथा गन्ना उत्पादन लागत में कमी जैसी चुनौतियों का सामना गन्ना एवं चीनी उद्योग को करना पड़ रहा है। इन चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण को नियोजित तथा क्रियान्वित किया जाएगा है।

राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्रभारी डा. एके साह व प्रधान वैज्ञानिक ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में गन्ना उत्पादन के विभिन्न पहलुओं जैसे प्रजाति नियोजन, बीज उत्पादन, आधुनिक बुवाई विधियाँ, पोषक तत्व प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जैविक विधि द्वारा नाशी कीट व बीमारी प्रबंधन, सूखा व जलभराव प्रतिरोधी तकनीक, गन्ना मशीन, पेड़ी प्रबंधन, जलवायु लचनशील गन्ना कृषि, पोस्ट-हारवेस्ट प्रबंधन, गन्ना विपणन व आय-व्यय ऑकलन पर आधुनिक जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दी जाएगी। डा. शाह ने बताया कि उत्तर भारत के 8 चीनी मिलों के 16 गन्ना विकास अधिकारी इस प्रशिक्षण में भाग ले रहे हैं।

जनसंदेश टाइम्स
लखनऊ, गुरुवार, 3 जुलाई 2014

नई तकनीक से रूबरू हो रहे अधिकारी

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान(आइआइएसआर) की ओर से 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर बुधवार को परिसर में शुरु किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर को आयोजित करने का मूल उद्देश्य चीनी मिल अधिकारियों को गन्ना प्रबंधन एवं उत्पादन के विभिन्न विषयों पर आधुनिक व वैज्ञानिक ज्ञान प्रदान कर उन्हें अधिक सक्षम, शिक्षित एवं बौद्धिक रुप से मजबूत किया जाना है।

प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन आइआइएसआर के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने दीप प्रज्ज्वलन कर-के किया। इस अवसर पर पर डॉ. सोलोमन ने कहा कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से चीनी मिलों में किसान के खेतों पर गन्ना उत्पादन में विज्ञान को समाहित करने का प्रयास है। उन्होंने बताया कि मौजूदा समय में तीन मुख्य चुनौतियाँ जैसे उपज में बढ़ोत्तरी, चीनी का अधिक उत्पादन तथा गन्ना उत्पादन लागत में कमी गन्ना व चीनी उद्योग के समक्ष है जिससे निपटने में यह प्रशिक्षण शिविर संजीवनी प्रदान करने का काम करेगा। इस शिविर में उत्तर भारत के 8 चीनी मिलों के 16 गन्ना विकास अधिकारी हिस्सा ले रहे है।

इस मौके पर उन्होंने कहा कि बीते

शुभारम्भ

आइआइएसआर में 21 दिवसीय गन्ना विकास अधिकारियों का प्रशिक्षण शुरु

उन्नत तकनीक से गन्ने का बढ़ेगा उत्पादन

कुछ सालों में सरकार द्वारा निर्धारित उदार चीनी नीतियों के कारण कई नई चीनी मिल देश में लगाई गई है। जिसके फलस्वरुप चीनी मिलों के अन्तर्गत आने वालें गन्ना क्षेत्रफल में कमी आई है। इस वजह से मिलों को स्थापित गन्ना पेराई क्षमता पर चलाने के लिए कम गन्ना क्षेत्रफल से अधिक गन्ना उत्पादन करने की आवश्यकता होगी। यह केवल आधुनिक व उन्नत उत्पादन तकनीक को अपनाकर ही हासिल किया जा सकता है। साथ ही साथ गन्ना किसानों को उन्नत गन्ना उत्पादन तकनीक प्रयोग करने के लिए जागरुक करना पड़ेगा। इस दिशा में चीनी मिलों में कार्यरत गन्ना विकास अधिकारी अहम भूमिका निभायेंगे। इसीलिए यहां पर गन्ना विकास अधिकारियों को गन्ना संबंधी उन्नत तकनीक और आधुनिक मॉडल से रुबरु कराया जा रहा है।

इस अवसर पर आइआइएसआर के वरिष्ठ वैज्ञानिक और राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्रभारी डॉ. ए के साह ने बताया कि कार्यक्रम में गन्ना उत्पादन के विभिन्न पहलुओं जैसे प्रजाति नियोजन, बीज उत्पादन, आधुनिक बुवाई विधियाँ, पोषक तत्व प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जैविक विधि द्वारा नाशी कीट व बीमारी प्रबंधन, सूखा व जलभराव प्रतिरोधी तकनीक, गन्ना मशीन, पेड़ी प्रबंधन, जलवायु लचनशील गन्ना कृषि, पोस्ट-हार्वेस्ट प्रबंधन, गन्ना विपणन व आय-व्यय ऑकलन इत्यादि पर आधुनिक जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को प्रदान की जा रही है। इस दौरान संस्थान के कई वैज्ञानिक उपस्थित रहे। ***वसं.***

कल्पतरु एक्सप्रेस
लखनऊ, गुरुवार, 3 जुलाई 2014

चीनी मिल अधिकारी सीख रहे आधुनिक तकनीक

लखनऊ। प्रदेश की चीनी मिलों में कार्यरत अधिकारियों के लिए एक जुलाई से 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ. एके साह और कुछ अन्य वैज्ञानिकों द्वारा प्रजाति नियोजन, बीज उत्पादन, आधुनिक बुवाई विधि, पोषक तत्व प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जैविक विधि द्वारा नाशी कीट व बीमारी प्रबंधन, सूखा व जलभराव प्रतिरोधी तकनीक आदि पर आधुनिक जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दी जाएगी।